रघुवीर सहाय

कवि परिचय :– रघुवीर सहाय समकालीन हिन्दी कविता के संवेदनशील कवि हैं। आप का जन्म 1929 में लखनऊ में हुआ। आप की सम्पूर्ण शिक्षा लखनऊ में हुई। वहीं आपने अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० की। शुरू में आप पत्रकार थे। आप 'प्रतीक' अखबार में सहायक संपादक रहे। फिर आप आकाशवाणी के समाचार विभाग में रहे। कुछ समय आप हैदराबाद से निकलने वाली पत्रिका 'कल्पना' और उसके बाद 'दैनिक नवभारत टाइम्स' तथा 'दिनमान'से संबद्ध रहे। साहित्य सेवा के कारण इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपका देहावसान 1990 में दिल्ली में हुआ।

''कैमरे में बंद अपाहिज''

पाठ सार :– दूरदर्शन के संचालक स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरों को कमजोर मानते हैं। वे एक विकलांग से पूछते हैं 'आप अपाहिज क्यों हैं ? आपको अपाहिज हो कर क्या दुःख होता है ? आप अपने दुःख को बताइये।' कैमरे पर वक्त की कीमत होती है। प्रश्न कर्ता अपाहिज को रूलाना चाहता है, जिससे दर्शकों में करूणा का भाव उत्पन्न हो
सके।

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में

उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं ?
तो आप क्यों अपाहिज हैं ?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है ?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा–बड़ा)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा

शब्दार्थ :– समर्थ = सक्षम, शक्तिमान = ताकतवर, दुर्बल = कमजोर, अपाहिज = अपंग, विकलांग

व्याख्या :– दूरदर्शन के संचालक समझते हैं वे बहुत सक्षम व शक्तिशाली है, क्योंकि वह अपनी बात को सुदूर पहुँचाने में सक्षम हैं। आज वो एक कमजोर को एक कमरे (स्टूडियो) में लायेंगे।

उस व्यक्ति से पूछा जायेगा –क्या आप अपाहिज हैं ? आप अपाहिज क्यों हैं ? आपको अपना अपाहिज होना दुःख तो देता होगा। कैमरामैन को कहा जाता है– अपाहिज को बड़ा–बड़ा दिखाओ। अपाहिज से फिर पूछा जाता ह ै–हाँ अपना दुःख बताइए। अपाहिज को जल्दी दुःख बताने को कहा है परन्तु वो बता नहीं पाता।

भाषा सौन्दर्य :–

1. _____भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. व्यंग्यात्मक शैली
4. तो आप क्यों अपाहिज है ?
   आपका अपाहिजपन ..... ? आदि में – प्रश्न अलंकार
5. व्यंजना शब्द शक्ति

सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है
कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा)
सोचिए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे ?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ–पूछकर उसको रूला देंगे
इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं ?
(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा)

शब्दार्थ :– कोशिश = यत्न, अवसर = मौका, रोचक = दिलचस्प

व्याख्या :– अपाहिज से पूछा जाता है –सोचकर बताइए कि आपको अपाहिज हो कर कैसा लग रहा है ? अपाहिज हैरान हो कर पूछता है –कैसा ? कार्यक्रम का संचालक कहता है–हाँ–हाँ बताओ, अपाहिज हो कर कैसा लग रहा है। कोई उत्तर न आने पर संचालक फिर कहता है –सोच कर बताइए कैसा लग रहा है। यह एक स्वर्ण अवसर है, आप को सारा भारत देख रहा है, यह अवसर आप खो देंगे। कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए हम अपाहिज को रूला देंगे। आप भी इसी का इन्तजार कर रहे हैं ना कि कब अपाहिज रोयेगा ?

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. कार्यक्रम को देखने वाले दर्शकों पर व्यंग्य किया गया है ।
4. प्रश्न अलंकार का सौन्दर्य

VASUNDHARAHINDI.COM

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों एक संग रूलाने हैं
आप और वह दोनों
(कैमरा
बस करो
नहीं हुआ
रहने दो
परदे पर वक्त की कीमत है)
अब मुसकुराएँगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी सी कसर रह गई)
धन्यवाद ।

शब्दार्थ :– कसमसाहट = बेचैनी, कोशिश = यत्न, धीरज = धैर्य, वक्त = समय, कसर = कमी

व्याख्या :– जब संचालक अपाहिज को रूलाने में सफल नहीं होता, तो वह टी०वी० के पर्दे पर एक फूली आँखो वाले व्यक्ति की एक बड़ी तस्वीर दिखाता है। तसवीर के व्यक्ति के होंठों पर कसमसाहट भी है। इस प्रकार संचालक एक और कोशिश करता है। शायद अपाहिज रोने लगे और दर्शक भी करूणा से रो पड़ें। परन्तु ऐसा नहीं होता। कार्यक्रम का समय समाप्त हो जाता है, क्योंकि पर्दे पर वक्त की कीमत होती है। दर्शक कार्यक्रम की असफलता पर व्यंग्य से मुस्कुराते हैं।

उद्घोषक घोषणा करता है 'आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम' और मन ही मन कहता है कि कार्यक्रम की सफलता में थोड़ी कसर रह गई। धन्यवाद।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल
2. छन्द मुक्त रचना
3. सामाजिक कार्यक्रमों की पोल खोली गई है

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों मे रखी गई हैं– आपकी समझ में इसका क्या औचित्य हैं ?
उत्तर :– कोष्ठक के माध्यम कवि ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। अलग–अलग लोगों को सम्बोधित किया है :–
जैसे कैमरा मैन के लिए –
कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा
कैमरा बस करो नहीं हुआ रहने दो ..... कीमत है
अपाहिज से –
यह अवसर खो देंगे
दर्शकों से –
यह प्रश्न पूछा नहीं जायेगा
आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे
संचालक अपने आप से–
बस थोड़ी कसर रह गई

प्रश्न 2. 'कैमरे में बंद अपाहिज' करूणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है–विचार कीजिए।
उत्तर :– दूरदर्शन पर सामाजिक उद्देश्य से परिपूर्ण कार्यक्रम के बहाने एक अपाहिज को दूरदर्शन पर दिखाया जाता है। उससे अनुचित प्रश्न किये जाते हैं, जैसे–आपको अपाहिज होकर कैसे लगता है आदि। कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए संचालक अपाहिज की अपंगता बेचना चाहता है, जिससे अधिक से अधिक धन कमाया जा सके। इस लिए
'कैमरे में बंद अपाहिज' करूणा के मुखौटें में छिपी क्रूरता की कविता है।

प्रश्न 3. 'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है ?
उत्तर :– दूरदर्शन के संचालक समझते हैं कि वे सक्षम हैं, शक्तिशाली हैं, क्योंकि उन के पास प्रचार–प्रसार की ताकत हैं। किसी को भी ऊँचा
चढ़ा सकते हैं, तो किसी को भी गिरा सकते हैं। चैनल के लाभ के लिए किसी के दुःख को भी बेच सकते हैं, अपनी शक्ति का दुर उपयोग कर
सकते हैं।

प्रश्न 4. यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे तो प्रश्न कर्त्ता का कौन–सा उद्देश्य पूरा होगा ?
उत्तर :– प्रश्न कर्त्ता व कार्यक्रम संचालक का एक की उद्देश्य है अधिक से अधिक पैसा कमाना और चैनल व कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाना। इस के लिए संचालक कोई भी तरीका अपना सकता है, जैसे वो एक अपाहिज को दूरदर्शन पर लाते हैं। उससे पूछा जाता है–आप अपाहिज हैं। आप अपाहिज क्यों है आदि ? यदि अपाहिज व दर्शक दोनों एक राथ रो पड़ते तो चैनल लोकप्रिय बन जाता तथा चैनल को धन लाभ होता।

प्रश्न 5. 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा हैं ?

उत्तर :– वक्त कीमती है, परदे पर दिखाया जाने वाला कार्यक्रम भी एक निश्चित समय के लिए दिखाया जाता है तथा उस का एक उद्देश्य होता है–जैसे संचालक किसी कार्यक्रम को बनाते हैं, उस पर पैसा लगाते हैं तथा बदले में पैसा चाहते भी हैं। आज व्यावसायिकता बढ़ रही है। मानवीय गुण महत्त्वहीन होते जा रहे हैं।

प्रश्न 6. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के व्यंग्य पर टिप्पणी कीजिए।

अथवा

कविता का संदेश/उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :– कविता में मीडिया पर व्यंग्य किया गया है। मीडिया अपने आपको शक्तिशाली समझता है, इसलिए एक अपाहिज को छोटे पर्दे पर लाते हैं, ये सोचकर उसकी अपंगता का लाभ उठा कर धन कमाना चाहते हैं, जबकि केवल धन कमाना ही कार्यक्रम का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। करूणा के मुखौटे में क्रूरता दिखाने के स्थान पर सहानुभूति प्रकट करे। धन कमाने के लिए अन्य बहुत साधन हैं, करूणा की आड़ में धन कमाना उचित नहीं।

प्रश्न 7. 'कैमरे में बंद अपाहिज' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करें ।

उत्तर :– कार्यक्रम के संचालक अपने कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के लिए एवं धन कमाने के लिए एक सामाजिक उद्देश्य से पूर्ण कार्यक्रम को लाते हैं तथा इस कार्यक्रम में एक अपाहिज को लाया जाता है। उससे उल्टे सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, जिस से अपाहिज रो दे। उसे रोता देख कर दर्शक रो देंगे तथा कार्यक्रम सफल हो जायेगा व चैनल को धन भी मिलेगा। इस तरह शीर्षक पूर्ण रूप से सार्थक है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM